Japanindia 2007

永遠の方へ

ヒンディー詩の日本語訳

अनंत की ओर

हिन्दी कविताओं का जापानी अनुवाद

ウニタ　サチダナンド

उनीता सच्चिदानन्द

永遠の方へ

अनंत की ओर

••स्कैन्ड / Scanned••

永遠の方へ

अनंत की ओर

(हिन्दी कविताओं का जापानी अनुवाद)

翻訳

ウニタ　サチダナンド

अनुवाद

उनीता सच्चिदानन्द

AKOGARE NO KAI
India Chapter of Int'l
Society of Takuboku
Studies, Japan

आकोगारे नो काइ

इण्डो-जापान एसोसिएशन फॉर लिटरेचर एंड कल्चर

प्राक्कथन

जापान और भारत के बीच आर्थिक सम्बन्ध पिछले दो दशक में काफी गहरे हुए हैं लेकिन सांस्कृतिक रूप से भारत का जापान की ओर बढ़ता रुझान, खास रूप से साहित्य के संदर्भ में एक नई शुरुआत है। पिछले पाँच सालों में जापानी साहित्य की कई प्रतिनिधि रचनाओं का अनुवाद हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में सीधा मूल जापानी से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। लेकिन अनूदित जापानी काव्य रचनाओं की कमी सर्वथा खटकती रही है। जो थोड़ी उपलब्ध हैं - वे प्राय: अंग्रेजी काव्यांतरण के माध्यम से संभव हो पाई हैं। जापानी साहित्य की अनुपलब्धता के बावजूद हिन्दी साहित्यकार जापानी कवियों और उनकी रचनाओं के प्रति उदासीन नहीं रहे हैं। जापान की अनूठी काव्यविधा 'हाइकु' से भारतीय रचनाकार चिरपरिचित हैं। इस संदर्भ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अज्ञेय (1911-1987) और जापानी भाषा के प्राध्यापक सत्यभूषण वर्मा (1932-2005) के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

2002 में भारत और जापान के राजनयिक संबंधों की पचासवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में पहला भारत-जापान साहित्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अपने उद्घाटन अभिभाषण में प्रो० नामवर सिंह ने कहा कि जापानी काव्यविधा वृहत् है और आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी साहित्य जापान की समकालीन काव्य-रस से परिचित हो। श्री अशोक बाजपेयी, प्रो० केदारनाथ सिंह, सुश्री इंदिरा गोस्वामी, श्री विनोद भारद्वाज, सुश्री मृदुला गर्ग, श्री राजेन्द्र यादव, सुश्री चित्रा मुद्गल, प्रो० गंगा प्रसाद विमल और श्री सुरेश सलिल ने विभिन्न सत्रों के दौरान अपने अध्यक्षीय भाषण में समकालीन जापानी कविताओं के हिन्दी काव्यांतरण की आवश्यकता पर बल देते हुए यह आशा व्यक्त की कि हमें अंग्रेजी अनुवादों का सहारा लिए बिना सीधा जापानी से विभिन्न भारतीय भाषाओं में काव्यांतरण करने की चेष्टा करनी चाहिए। 2002 में बारह खण्डों में प्रकाशित अनूदित जापानी

कहानियों और लघु-उपन्यासों के संकलन पर अपनी समीक्षाओं में श्री मंगलेश डबराल, श्री त्रिनेत्र जोशी, श्री आलोक मेहता, श्री बाल मुकुन्द, श्री इब्बार रब्बी व कई अन्य समीक्षकों तथा इण्डिया टुडे, आउटलुक, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, दैनिक हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा, आजकल व अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों में भी जापानी-हिन्दी काव्य-संगम की आवश्यकता और सार्थकता की बात उठाई गई है।

प्रबुद्ध साहित्यकारों और समीक्षकों की इस अनुशंसा से प्रेरित हो जापानी काव्य साहित्य के हिन्दी अनुवाद की दिशा में कुछ गतिविधियाँ 2002 के पश्चात् शुरू हुई। ध्येय यह था कि जापानी साहित्य, जापानी भाषा के भारतीय जानकारों के दायरे तक ही सीमित न रह कर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से भारत के जनमानस तक पहुँचे। इसके लिए यह नितांत आवश्यक था कि जापानी भाषा व साहित्य के विशेषज्ञ भारतीय साहित्यकारों विशेषकर कवियों के हुनर और रसबोध का लाभ उठाते हुए मिलजुलकर काव्यांतरण की दिशा में प्रयत्नशील हों।

अप्रैल 2005 में भारत के प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह और जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जुनइचिरो कोइज़ुमी ने भारत-जापान संबंधों को और अधिक व्यापकता प्रदान करते हुए आठ-सूत्री सहयोग समझौते की अनुशंसा की। इसके अन्तर्गत दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और शैक्षिक पहलुओं पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई है। इस बात पर भी ज़ोर दिया गया है कि सांस्कृतिक और साहित्यिक आदान-प्रदान के ज़रिए दोनों देशों की जनता एक-दूसरे के करीब लाई जाए ताकि भारत व जापान की जनता के मानस पटल पर एक-दूसरे देश की बेहतर छवि उभर कर आए और दुनिया के नक्शे पर जापान व भारत शांति-दूत के रूप में एक-दूसरे के सहयोगी बनें।

2002 से 2004 तक का ज़्यादातर समय जापानी कविताओं के चयन और उन्हें इकट्ठा करने में बीत गया। इस प्रक्रिया में दिल्ली व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालयों में आमंत्रित जापानी साहित्य के लगभग एक दर्जन विशेषज्ञों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें प्रो॰ कात्सुहिको हामाकावा, प्रो॰ हारुकि ई, प्रो॰ मिज़ोकामि, प्रो॰ आकिरा ताकाहाशी, प्रो॰ कावामुरा, प्रो॰ तेइजी साकाता, प्रो॰ तेरुओ इकेउची और प्रो॰ योशीत्सुगु मोचीज़ुकी का योगदान अविस्मरणीय है।

2004 में जापानी साहित्य के प्रति बढ़ते रुझान के फलस्वरूप 'इन्दो-जापान एसोसिएशन फॉर लिटरेचर एण्ड कल्चर' की स्थापना हुई। अगले वर्ष (2005) में अन्तर्राष्ट्रीय ताकुबोकु अध्ययन संस्था (जापान) की भारत पीठ 'आकोगारे नो

काइ' की भी नींव रखी गई। इन दोनों संस्थानों का प्रमुख उद्देश्य भारत और जापान में परस्पर साहित्य को अनुवाद व शोध के माध्यम से जनमानस तक पहुंचाना है। इस संदर्भ में ''आकोगारे नो काइ'' ने पहल की जिसके फलस्वरूप जापानी काव्यरस के हिन्दी काव्यांतरण की पहली प्रस्तुति 2005 में जापानी साहित्य पर दिल्ली में आयोजित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान एक विशेष कार्यशाला और कवि सम्मेलन में हुई। इस कार्यशाला में जहां एक ओर जापान के प्रखरतम कवि इशिकावा ताकुबोकु की ताऽका शैली की रचनाओं के बड़े पैमाने पर अनुवाद प्रस्तुत किए गए, वहीं जापान के कई अन्य श्रेष्ठ आधुनिक कवियों की रचनाओं का भी काव्यांतरण दिग्दर्शित किया गया। इनमें युद्ध के विनाश और मानवीय त्रासदी को दर्शाती ताकुबोकु की लम्बी कविताएं, कितामुरा तारो की प्रतिनिधि युद्धोत्तर काव्य रचना 'आमे', मियोशी तोयोइचिरो की एकाकीपन से ओतप्रोत 'शिकीइशी नो उए दे', किहारा कोइची की हिरोशिमा में परमाणु बम की विनाश लीला को दर्शाती 'मोकुशी', तामुरा रयूइचि के काव्य संकलन 'माबोरोशी ओ मीरू हितो' से उद्धृत इंसानी सूनेपन को उजागर करती एक मार्मिक कविता का हिन्दी काव्यांतरण प्रस्तुत किया गया। इनके अलावा कुरोदा साबुरो, तोगे सानकिची, तानाका कात्सुमी, मोमोता सोजी, कानेको मित्सुहारु, मियोशि तात्सुजी, इबाराकी नोरिको, तानीकावा शुन्तारो, काजुको शिराइशी और आरिमा ताकाशी की रचनाओं का भी पाठ हुआ।

2006 में 'आकोगारे नो काइ' और इन्दो जापान एसोसिएशन फॉर लिटरेचर एण्ड कल्चर के तत्वावधान में आयोजित जापानी काव्यमयी सौंदर्यशास्त्र पर एक दिवसीय संगोष्ठी में ताकुबोकु की 'एक मुट्ठी रेत' और 'धुआं' लघु कविताओं ताऽका के काव्यांतरण की दूसरी किश्त पेश की गई। जापानी से हिन्दी में काव्यांतरण की इस प्रक्रिया में कोशिश की गई है कि यथासंभव अनुवाद सीधा मूल जापानी से किया जाए न कि अंग्रेजी काव्यांतरण के जरिए। कोशिश यह भी रही है कि हिन्दी के कवियों के द्वारा ही काव्यांतरण हो।

2005 की कार्यशाला के उपरांत जापानी काव्य रचनाओं के अनुवाद की गतिविधि में और तेजी आई। तय हुआ कि इशिकावा ताकुबोकु की ताऽका संकलन - 'इचिआकु नो सुना' (एक मुट्ठी रेत) का अनुवाद संपन्न किया जाए। 'स्वसानिध्य' और 'धुआं' इन्हीं प्रयत्नों का परिणाम है। अगले वर्ष अंतर्राष्ट्रीय ताकुबोकु संस्था का अधिवेशन भारत में आयोजित होगा जिसमें ताकुबोकु की 'इचिआकु नो सुना' के बाकी खण्डों के अनुवाद को प्रकाशित करने को योजना है। इन दो पुस्तकों के काव्यानुवाद की प्रक्रिया में कई हिन्दी व जापानी-कवियों, अनुवादकों, भाषाविदों आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें प्रमुख हैं प्रो॰

केदारनाथ सिंह, श्री अशोक बाजपेई, प्रो० गंगा प्रसाद विमल, श्री मंगलेश डबराल, प्रो० वरयाम सिंह, प्रो० रीता रानी पालीवाल, प्रो० कृष्ण दत्त पालीवाल, श्री प्रयाग शुक्ल, श्री सुरेश सलिल, श्री इब्बार रब्बी, श्री राजेन्द्र प्रसाद धस्माना, प्रो० हेमंत जोशी, श्री त्रिनेत्र जोशी, श्री विनोद भारद्वाज, प्रो० प्रियदर्शी मुखर्जी, प्रो० सुषमा जैन, श्रीमती राज बुद्धिराजा, श्री तेरायुकि होशिना, डा० देवेन्द्र चौबे, प्रो० अनीता खन्ना, प्रो० राजेन्द्र तोमर, डा० पी.ए. जार्ज, डा० मंजुश्री चौहान, श्रीमती जनश्रुति चंद्र सेठ, श्री केन्द्रज धस्माना, प्रो० कात्सुहिको हामाकावा, प्रो० मोचीजुकी योशीत्सुगु, प्रो० तेरुओ इकेउचि, सुश्री फुमिको मिजुकावा, आदि।

ताकुबोकु के ताऽका की दो पुस्तकों में रूपरेखा कुछ इस प्रकार है। सबसे पहले परिचय में 2006 की 'जापानी काव्यमयी सौंदर्यशास्त्र के साथ एक दिन' के बीज भाषण 'ताकुबोकु की ताऽका हरेक जापानी के दिलों की अनुक्रमणिका है' को लिया गया है। ताकुबोकु की मूल ताऽका को आधुनिक जापानी भाषा में मोचीजुकी योशीत्सुगु की टिप्पणियों के साथ प्रस्तुत किया है और साथ में उनीता सच्चिदानन्द एवं अन्य भारतीय शोधकर्ताओं एवं भारत के श्रेष्ठ कवियों का अनुवाद दिया गया है। कोशिश की गई है कि भारत में अधिक से अधिक लोग ताकुबोकु के ताऽका को समझ सकें। ताऽका और हाइकु के अनुवाद से संबंधित मोचीजुकी का विचार कुछ इस प्रकार है– ''ताऽका और हाइकु जापानी भाषा में 5–7–5–7–7 व 5–7–5 सिलेबुल से बनता है। ताऽका पांच और हाइकु तीन पंक्तियों की कविता है। पांच व सात स्वरों की आवश्यकता जापानी भाषा की अपनी आवश्यकता है इसलिए दूसरी भाषा में इसका अनुवाद हूबहू नामुमकिन है। ताऽका की पांच पंक्तियों और हाइकु की तीन समझ कर अनुवाद कर लेना ही बहुत है'' (मोचीजुकी योशीत्सुगु एवं अन्य 'ताकुबोकु ताऽका के तरीके', 1997)। मोचीजुकी के इस तरीके की परिभाषा को रूपांतरित कर पाना अभी भारत में कम दिखा है।

काव्यांतरण के दौरान हिन्दी कवियों का जापानी शैली की ताऽका और हाइकु से एक लगातार सम्बन्ध बना रहा। फलस्वरूप इन कवियों ने भी हिन्दी में हाइकु और ताऽका शैली में मौलिक रचनाएं कर डालीं। हालांकि भारतीय भाषाओं में हाइकु रचनाएं कोई नई उपलब्धि नहीं हैं। कविराज रवीन्द्रनाथ और अज्ञेय के अलावा कई भारतीय कवियों ने इस शैली का प्रयोग किया है। गौरतलब है कि भारतीय भाषाओं, खासकर हिन्दी की हाइकु काव्य रचनाओं से जापानी पाठकों का परिचय लगभग नहीं के बराबर है। विचार हुआ कि जब 2007 में भारत और जापान की आपसी सांस्कृतिक संबंध की पचासवीं वर्षगांठ मनायी जा रही है, तब क्यों न

हिन्दी हाइकु व ताऽका का जापानी अनुवाद भी प्रकाशित किया जाए। इन्दो-जापान एसोसिएशन की इस दिशा में पहल रंग लाई और भारत में ताऽका और हाइकु प्रयोग को हमने एक पुस्तक के रूप में भारत और जापान के पाठकों को समर्पित करने की योजना बनाई। हिन्दी से जापानी काव्यांतरण में प्रो॰ हामाकावा का सहयोग सदा याद रहेगा। 'निकट हम' शीर्षक से प्रकाशित इस काव्य संकलन की कुछ कविताओं का प्रकाशन जापान में प्रकाशित अन्तर्राष्ट्रीय हाइकु पत्रिका 'हेपबर्न' में 2006 और कुछेक का हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में भी हो चुका है।

जापानी हिन्दी कविता समागम की इस शृंखला में समकालीन भारतीय कविताओं के जापानी अनुवाद का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जापान में आधुनिक भारतीय कविताओं के अनुवाद का प्रकाशन पिछले सौ वर्षों में व्यापक रूप से होता रहा है हालांकि विगत दो-तीन दशकों में इसकी रफ्तार कुछ धीमी रही है। हिन्दी के ग्यारह समकालीन कवियों की चुनिन्दा कविताओं के जापानी अनुवाद का उपहार 'अनन्त की ओर' जापानी पाठकों को समर्पित करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है। इस कार्य को अंजाम देने में जापान के प्रोफेसर तेरुओ इकेउची का असाधारण सहयोग मिला है।

गंगा नदी सदियों से भारत के जनमानस की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक परिवेश की केन्द्र बिन्दु रही है। हर विदेशी पर्यटक इस विशाल सदानीरा के प्रति हर भारतीय के दिल में अटूट श्रद्धा और विश्वास को देख विस्मित हो जाता है। जापानी कवियों ने भी गंगा को केन्द्र मान भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपनी रचना में उतारने की कोशिश की है। 'गंगा बहती है' जापानी और भारतीय कवियों की रचनाओं का एक लघु संस्करण है।

भारत व जापान के पारस्परिक सांस्कृतिक संबंधों के स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर पिछले तीन सालों से जापानी व हिन्दी काव्य के अनुवाद की प्रक्रिया के परिणाम की पाँच पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है। ये पाँच पुस्तकें जापानी व हिन्दी में एक साथ प्रकाशित हो रही हैं और इनमें जापान व भारत की आधुनिक काव्य परम्पराओं को काव्यानुवाद के माध्यम से एक साथ पिरोने की चेष्टा की गई है।

काव्यानुवाद में जापानी भाषा साहित्य के छात्रों व शोधकर्ताओं की एक बड़ी जमात ने भी काफी उत्साह के साथ शिरकत की। हिन्दुस्तान के जाने-माने कवियों एवं साहित्यकारों का स्नेह एवं सहयोग हमेशा मिलता रहा। इस प्रक्रिया में शामिल सभी महानुभावों को हमारा शत-शत प्रणाम।

जैसा कि विदित है काव्यानुवाद का अनुष्ठान पिछले कुछ वर्षों से लगातार

चल रहा था। इस अनुष्ठान में हमें कई संस्थानों और मित्रों से हर तरह की मदद मिलती रही है। भारत में जापानी साहित्य के अनुवाद व उनकी लोकप्रियता बढ़ाने में जापान फाउण्डेशन और जापानी दूतावास का विशेष सहयोग मिला है। यों कहें कि श्री यो फुकाजावा के कार्यकाल (2002-2007) में साहित्यिक अनुवाद और कार्यशालाओं के आयोजन को काफी बल मिला। श्री फुकाजावा और फाउण्डेशन के सह-निदेशक श्री होशिना जी और पूर्व सह-निदेशक श्री कोजी सातो का जितना भी धन्यवाद करें कम ही होगा। भारत में जापानी दूतावास के राजदूत श्री यासुकूनी एनोकी, श्री आर होरिये, श्री शिगेयुकी शिमामुरा, श्री हाजिमे मात्सुमुरा, दिल्ली विश्वविद्यालय व जे.एन.यू. के मित्र, जापान में भारत के पूर्व राजदूत श्री अर्जुन असरानी जी के धैर्य, स्नेह और प्रोत्साहन के लिए हम सदा इनके ऋणी रहेंगे। मित्रों की एक लम्बी सूची है। भारत-जापान सांस्कृतिक संबंधों की पचासवीं वर्षगांठ पर हम सबका अभिवादन करते हैं। अंत में हमारे परिवार के सदस्यों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता जाहिर करना चाहेंगे जो धैयपूर्वक घर से हमारी अनुपस्थिति सहते रहे। ये पुस्तकें हम इन तमाम व्यक्तियों और संस्थानों को समर्पित करते हैं।

जापानी-हिन्दी काव्य समागम की ये पांच कड़ियां भारत-जापान संबंधों को और घनिष्ठ बनाएंगी, इस आकांक्षा के साथ भारत और जापान के काव्य प्रेमियों को ये पांच पुस्तकें समर्पित हैं। इन पुस्तकों की विशेषता यह है कि इनमें जापानी और हिन्दी मूल के साथ उनके काव्यानुवाद मौजूद हैं, जिनका रसास्वादन दोनों देशों के काव्यप्रेमी कर सकते हैं। साथ में यह कहना चाहेंगे कि इन पुस्तकों में यदि कोई त्रुटियां नजर आएं तो उनका जिम्मेवार हमें ठहराया जाए।

उनिता सच्चिदानन्द • मोचीजुकी योशीत्सुगु

序

日本とインドの間の経済関係は、20 年ほど前から深くなりつつある。しかし、文化的な面からみると、インドの日本に対する関心が生まれたのはつい最近のことだと言えよう。特に、文学に関して、このことは、はっきり言えよう。この十年ほどの間に、小説を中心とした日本文学の代表作家と作品がインドの言葉に日本語から直接翻訳されている。しかし、詩歌の分野での翻訳は欠けていて、ほとんどみられないほどである。あっても、それは全部英語からのものなのだ。

日本詩歌の翻訳が十分に得られないと言っても、このことから、インドの文学者が日本詩歌に無関心だったとは言えない。例えば、日本のすばらしい俳句というジャンルはインドでずっと前から知られているし、この面でのラビンドラナート・タゴール（Rabindra Nath Tagore）、アッギエー（Sacchidanand Vatsyayan Ajneya, 1911-1987, ヒンデイー作家・詩人 1950 年来日）とサッテイヤブシャン・ワルマー（S. B. Verma, 1932-2005）日本語教授、ネルー大学）の貢献を忘れることはできない。

日印国交樹立 50 周年を迎えた 2002 年に、最初の「文学による印日交流をもっと深めよう：歴史と将来をめぐる」日印文学会議が開催されたが、その開会セッションの主賓、文芸評論家でネルー大学名誉教授のナームワール・シンは言った。「日本の詩歌のジャンルは膨大で、私たちインドの文学者は、日本の現代詩歌の味・作風を知らなければいけない。」と。

アショク・ワジペイ(Ashok Vajpeyi)、ケダルナート・シン (Kedar Nath Singh)、ラジェンドゥラ・ヤードー(Rajendra Yadav)、インディラ・ゴスワーミー(Indira Goswami)、ミリドゥラ・ガルグ (Mridula Garg)、チトラ・ムッドガル(Chitra Mudgal)、マングレーシュ・ダブラル(Manglesh Dabral)、ガンガ・プラサード・ヴィマル(Ganga Prasad Vimal)、スレシユ・サリル(Suresh Salil)、ヴィノードゥ・バーラドゥヴァージ(Vinod Bhardavaj)、等インドの詩人と作家もいろんなセッションの議長をしながら、同じ趣旨のことを言ったのである。「インドの読者は日本文学を知らないし、少し知っていてもそれは英語から知っているに過ぎない。だから、日本をよく理解するために日本の同時代の文学と詩歌の翻訳がどうしても必要だ。しかも、それを英語からではなくて直接日本語からする必 要があるのだ。」と。

上に述べた作家以外にも、ヒンディー新聞とヒンディー文学雑誌の評論家例えば、アローク・メヘタ(Alok Mehta)、バール・ムクンド、(Bal Mukund)、イッバル・ラビー(Ibbar Rabbi)、ティリネトラ・ジョーシー(Trinetra Joshi)らが、2002 年に日本文学のヒンディー語訳 12 冊が出版された時 India Today, Outlook, Nav Bharat Times, Janasatta, Dainik Hindustan, Rashtriya Sahara, Ajkal, Nandan と地域新聞や文学雑誌に日本詩歌の重要性を指摘したのである。

インドのこういう知識人の希望と言葉に刺激されて、日本文学の知識が日本文学の専門者の間だけではなく、インドのすべての読者に広がることを目的として、日本詩歌をヒンディー語に翻訳する活動がその後徐々に始まったのである。

そのためには、インドにおける日本文学者などが、インドの詩人と文学者の才能と知識を活用して、一緒に詩歌の翻訳という方向に向かなければならなかったのである。

2005 年 4 月にインド首相マンモハン・シンと日本の首相純一郎小泉首相ににより、日印友情関係が発展するための八つの点に関する取り決めが結ばれた。この中の一つは両国の間に文化的・教育面が重んじられた点である。文化交流

によって両国の人々がもっと深く理解し、その上にお互いを近づけることが必要なのである。お互いの心の中にお互いの「好ましいイメージ」を作る必要があるのである。インドと日本は世界の地図に、平和を広げ、お互いの協力的な姿を作る必要があるのである。

2002 年から 2004 年のほとんどの時間が日本詩歌の収集と選択とに過ごされた。この仕事にネルー大学とデリー大学に国際交流基金がお招きした客員教授は大事な役割を果たして来た。特に濱川勝彦、伊井春樹、溝上富夫、川村湊、坂田貞二、池内輝雄、望月善次、福田眞人、高橋明、の貢献を感謝と共に記したいと思う。

日本文学に対するインド文学者の興味がますます大きくなった結果 2004 年に Indo-Japan Association for Literature and Culture という組織が、2005 年には国際啄木学会のインド支部「あこがれの会」が、日本とインドの人々にお互いの文学を知らせようという目的で創立された。

先ず具体的な活動を起こしたのは「あこがれの会」だった。2005 年に二日間の"日本文学の国際会議"(International Seminar on Japanese Literature) を開催し、その一日は日本詩歌に関するものとした。この日には、インドの詩人が石川啄木の詩を自らのヒンディー語訳で朗読したのである。「あこがれの会」によって多数の詩人が石川啄木の短歌をヒンディー語に翻訳したし、それと共に日本の現代詩も翻訳・朗読された。戦争に対する啄木の詩とともに北村太郎、三好豊一郎、黒田三郎、木原孝一、谷川俊太郎、田村隆一、白石かずこ、茨木のり子、金子光晴、百田宗治、三好達治、田中克己、峠三吉の戦争詩と有馬嵩のインドに関する詩が翻訳・朗読されたのである。

2006 年には、「あこがれの会」と Indo-Japan Association for Literature and Culture とが一緒になり、「A Day with Japanese Poetic Aesthetics 日本詩歌の美学と一日」というセミナ～を開き、石川啄木の短歌や詩及び出席し

たインド・日本両国の詩人達の自作などを日本語・ヒンディー語で朗読し、論議したのであった。

当日の、日本作品の翻訳はできるだけ、直接日本語から行うことを目指したのであるが、インドの日本文学研究者と詩人たちの努力で一定の成果を収めることができた。

以下、今回出版する五冊についての出版意図などに触れることにしたい。

先ず『エク・ムッティー・レートゥ（一握の砂）Part-I・II』は、石川啄木の歌集『一握の砂』のうちから冒頭二章の「我を愛する歌」と「煙　一・二」の二つの章を選んで、二冊の本としたものである。（来年度は、国際啄木学会のインド大会を予定しているので、それまでには残りの三章も含めて『一握の砂』全巻の翻訳・発行を予定している。）『エク・ムッティー・レートゥ（一握の砂）Part-I・II』の出版は、2005 年と 2006 年の詩のセミナーに朗読された詩の翻訳を踏まえたものであることも付け加えておこう。

この事業には、日本文学者とネルー大学、デリー大学の学生たちと詩人たちの参加と協力はなによりも大事な役割を果たしたのである。例えばケダルナート・シン（Kedarnath Singh）、アショク・ワジペイ（Ashok Vajpeyi）、ガンガ・プラサド・ヴィマル（Ganga Prasad Vimal）、ワルヤム・シン（Varyam Singh）、リタ・ラニー・パリワール（Reeta Rani Paliwal）、キリスンダット・パリワール（Krishan Dutt Paliwal）、マングレーシュ・ダブラル（Manglesh Dabral）、プラヤグ・シュクラ（Prayag Shukla）、スレシュ・サリル（Suresh Salil）、望月善次（Mochizuki Yoshitsugu）、イッバル・ラッビ（Ibbar Rabbi）、ラジェンドラ・ダスマナ（Rajendra Dhasmana）、ヘマント・ジョシー（Hemant Joshi）、チリネトラ・ジョシー（Trinetra Joshi），ヴィノードゥ・バーラドゥヴァージ（Vinod Bhardavaj）、ピリヤダルシ・ムカルジー（Priyadarshi Mukherji）、ラジ。ブッデイー・ラジャ（ Raj Buddiraja）、テラユキ・ホシナ(Terayuki Hoshina)、スシュマ・ジェイン（Sushama Jain）、ラジェインドラ・トマ

ル (Rajendra Tomar)、アニタ・カンナ (Anita Khanna)、 P.A. ジョジ (P.A. George)、 マンジュスリー・チョハーン (Manjushree Chauhan)、 ジャナシュルテイ・チャンドラ・セト (Janashruti Chandra Seth)、 ケンドラジ・ダスマナ (Kendraj Dhasmana)、 デベンドラ・チョウベー (Devendra Chaubey)、 マドユ・シャルマ (Madhu Sharma)、ランジト・シャハ (Ranjit Saha)、ヨシヨ・タカクラ (Yoshio Takakura)、ニタシャ・シャルマ (Nitasha Sharma)、 スミタ・バッタチャルヤ (Sumita Bhattacharya)、アンビカ・バス (Ambika Basu)、モイヌッデイーン (Md. Moinuddin) 、プレムパル・シ (Prempal Singh) 、ラジラキーセン (Rajlakhi Sen) 、プナム・ナンド・デブ (Poonam Nand De) 、 ラチタ・シリワスタワ (Rachita Srivastava) 、デイウィヤ・ジャ (Divya Jha)、イムラン・カン (Imran Khan)、 ネサル・カン (Nesar Khan)、ニシャ・クマリー (Nisha Kumari)、ビノイェ・パール (Binoy Paul)、ヒマンク・メッタル (Himank Meettal)、 ギター・サチデワ (Gita Sachdev)、 ビナヤク・バルデユワジ (Vinayak Bharadwaj)、 ナレンドラ・クマール (Narender Kumar)、アンキタ・ナレシュ (Ankita Naresh)、 グルジンダル・シン・サッグ (Gurjinder S. Saggu) 、クマール・アビジート (Kumar Abhijeet) 、アルナンシュ・チャクラバルテイー (Arunanshu Chakrabarty) らと日本からの濱川勝彦、水川布美子と池内輝雄のおかげで詩歌の翻訳が進み、営みそれ自体も励まされたのである。

具体的な形としては、先ず啄木案内も兼ねて望月が昨年の「A Day with Japanese Poetic Aesthetics : Indian Experiments in Tanka and Haiku」で行った基調講演「日本人の心の索引としての啄木短歌」を掲げ、次いで啄木の短歌に対して、望月の日本語による現代語訳とウニタ及びインド詩人、日本語研究者によるヒンディー語訳とをつけ、その後に啄木略年譜を付けている。インドにおける一人でも多くの人に啄木短歌を理解してもらいたいことを目指してのものである。

短歌や俳句の翻訳については、原則的には、望月の次の考えによっている。

「短歌と俳句は日本語による 5-7-5-7-7 又は 5-7-5 による詩型である。5 音と 7 音とを基本として、短歌の場合は五つの積み重ね、俳句の場合は三つの積み重ねにより詩型である。このうち、五音と七音の必然性は、日本語の＜二音一拍子＞によるものであるから、他の言語への翻訳はほとんど不可能である。短歌の場合は五行、俳句の場合は三行にするのが、翻訳としては精一杯のところであろう。」〔望月善次『啄木短歌の方法』（1997）他〕

望月のこうした考えを基本的には肯定するものの、今回実現しているのは、限られたところとなっていることご覧いただく通りである。

詩歌の翻訳の間、インドの詩人達がずっと俳句と短歌とに接触した結果、数人の詩人たちがヒンディー語で俳句と短歌を創り始めた。先にも述べたが、俳句の創作自体は、インドでは全く新しいことではないのも事実であるが、同時にインド人のヒンディー語で創られた俳句を日本の読者があまり知らないのも事実だろう。

『ニカト・ハム（近づけり）』は、こうした現状への一つの問題提起をも試みようとしたものである。言葉をかえて言えば、2007 年は日印文化交流の 50 年及び日本とインドの間で文化交流協定が締結されて 50 年目にあたるので、日印文化交流をもっと深かめようということも考えて、Indo -Japan Association for Literature and Culture がインド人の俳句の本を出版しようと考えたのだとも言えよう。

なお、ヒンディー語で創られた俳句を日本語にする努力は 2006 年に濱川勝彦教授とともに行われてもいて、その中の俳句が国際俳句雑誌、『HEPBURN』（March, 2006, Vol.100）に掲載されたことも記しておこう。

詩とインド詩人たちの日本詩に対する熱情を見てインドの現代詩の日本語訳も出版しようと考えられた。日本語では、インドの詩人の翻訳は、ずっと以前から行われているから、全く新しいことではないのだが、日本とインドの詩人達の友情を

更に深めるために、また人と人との心を詩で味わう日本人の心をインド人が知るために、こうした交流は意味ある交流となるだろう。「御互いをよく理解するために御互いの文化を知ろう。人を知ろう。人の心を知ろう。人と人の心を詩で知ろう。詩は心の声なのだから。」

池内輝雄教授の大変な御尽力により、この翻訳を『アナント・キー・オル（永遠へ）』本の形にできたのである。

ガンジス川は昔からインドの人々や一般大衆にとって、文化的にも、宗教的にも、また経済的にも中心とされて来た。ガンジス川に対する、あらゆるインド人の強い信念と尊敬の態度には、外国の方は驚かれるばかりだろう。日本人の作家とインドの詩人たちがガンジス川を中心にして、インド人の生活の色々な面を作品として描くとすればどうなるだろうか。『ガンガー・ベハティー・ヘ（ガンガーは流れる）』には、ウニタの日記とそれに対する望月のコメントという「日印交流」の具体的な一つの形を手始めとして、望月、ケダル・ナト・シン、有馬たかしによるインド及び日本の詩を掲げ、それぞれが「ガンガー」とどう接し、どう受け入れようとしたかを示そうとしたものである。

ご覧戴くように、日本語とヒンディー語の両方によって書かれているのが、この五冊の特徴であるが、このことにより、インド人も日本人もお互いの詩や心が味わえるのである。

日印文化交流協定が締結されて 50 年目のこの年に、日本とインドの詩歌の熱情のような交流の証とするこの５冊の叢書的著書が、日印両国の人と人の心を結び、そのことによって両国の絆が一層強くなり、両国の関係が更に発展するのならどんなにありがたいことだろう。

既に述べたこととも重なる点もあるが、今回の詩の翻訳に対して、日本語と日本文学の学生たちと研究者たちが、積極的に参加してくださったことは非常に印象的なことであった。特に、この営みに対してインド文学者たちと詩人達が大きな役割を果たしてくれたことに、心からの感謝を捧げたい。

また、数年前から続いているこの詩の翻訳事業には、色々な組織と友情の支えや協力があったのである。インドにおける日本文学と日本文学の翻訳への関心を増やすためには、インドにある日本大使館と国際交流基金の協力が何よりも大事なことであった。特に、国際交流基金の深沢陽所長の期間に、日本文学の翻訳とセミナーが始まり、続いてきたのである。深沢所長や佐藤副社長、保科所員に改めて感謝したい。日本大使館からも、榎木大使、ホリエ様、シゲユキ・シマモリ、一松村等書記官を初めとする皆様に感謝したい。また、インド大使のアルジュン・アスラニーの愛しみと協力、芸例も忘れられないものの一つである。

デリー大学とネール大学の先輩。友人の方々の励ましは、今更書き記すことも不自然なほどの日常的なものであった。そうした思いもあり、個々のお名前を挙げることこそしないが、その深い絆をありがたく思うのである。

最後に私事となり、恐縮であるが、この事業についいも家族の我慢を強いるも少なくなかったことも、二人の共通の思いである。

日印文化交流の 50 年に当たるこの年に、この五冊を関係する皆様への感謝と共に捧げると共に、インドと日本とを愛する全ての人々上に、二つの国の絆のために、この五冊の著書を捧げたい。

ウニタ　サチダナンド・望月善次

इकेउची सेंसेइ
को सादर समर्पित
池内輝雄先生
に捧げる

अनुक्रम

प्राक्कथन *v*
केदारनाथ सिंह / नक्शा 1-6
वरयाम सिंह / नज़र आना साबुत / कहना कठिन 7-16
प्रयाग शुक्ल / लकड़हारे 17-26
अशोक वाजपेयी / मछुआरा 27-36
इब्बार रबी / कंडक्टर 37-44
ज्ञानेश्वर मनोहर मुले / पहुंच रहा हूं 45-50
मंगलेश डबराल / लंबा रास्ता / अत्याचारियों की थकान 51-58
गंगा प्रसाद विमल / परतन्त्रता में मुक्त 59-68
सुरेश सलिल / पौ फटी... 69-72
राजेन्द्र धस्माना / कोई नहीं मानता / गरल पीना 73-78
राज बुद्धिराजा / पांच ताऽका कविताएं 79-84

目次

序 *xi*
ケダルナト　シン/地図 1-6
ワルヤム　シン/完全に見える/いうのは難しい 7-16
プラヤグ　シュクラ/木こり 17-26
アショク　バジペイ/漁師 27-36
イッバル　ラッビ/カンダクター 37-44
ギャネスワル　ムレ/もうすぐ届く 45-50
マングレーシュ　ダボラル/長い道/暴虐の疲労 51-58
ガンガ　プラサード　ウィマル/隷属に自由 59-68
スレス　サリル/夜が明けた 69-72
ラジェンドラ　ダスマナ/だれも同意しない/飲むのは 73-78
ラジブッディーラジャー/五つの短歌 79-84

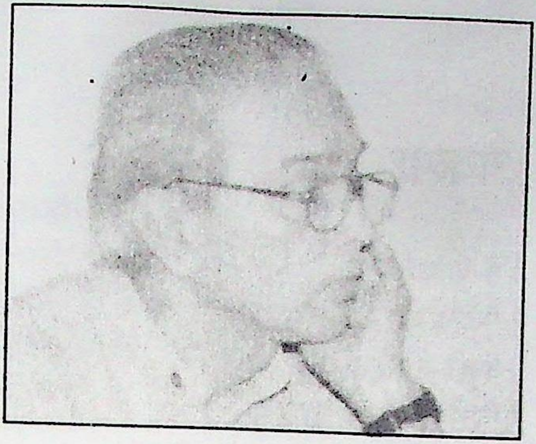

केदारनाथ सिंह (1934, बलिया)

वरिष्ठ कवि, कथाकार, पेशे से अध्यापक। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित, साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान प्रमुख हैं। प्रमुख कृतियां 'बाघ', 'यहां से देखो'। ग्रामीण जीवन, अपनी जमीन, जिंदगी, मानवीयता का अस्तित्व, आज के भारत में आदमी बनकर रहने की इच्छा टूटी हुई वस्तुओं से निराशा नहीं बल्कि यात्रा लगातार चलनी चाहिए, जो नष्ट हो जाता है वह कितना ही क्षुद्र क्यों न हो, उन्हें दु:खी करता है– कवि का ऐसा हृदय अंकित है काव्य संकलन 'यहां से देखो' में।

ケダルナート・シン

(1934, バリヤー、ウッタルプラデシュ州))

詩人・作家・職業：ヒンデイ文学の先生、主な詩集："バーグ"（虎）、"ヤハン・セ・デコ"（ここから見ろ）
主な受賞："サヒッテイヤ・アカデミ・ラシュトリヤ・プラスカール""メテイリシャラヌ・グプト・サッマーン"
村生活、自分が生まれたところの思い出、人生・人間性の存在・今のインドに人間として生きる希望、壊れたもので失望ではなく人生の旅が続く希望が生まれる、小さなものの死で悲しむ詩人の心などが"ヤハン・セ・デコ"詩集に描かれている。

नक्शा

मैं बाज़ार गया
मैनें बाज़ार में खरीदा एक नक़्शा
नक़्शे में बहुत-कुछ था
जिसे मैं जानता नहीं था

मैं जानता नहीं था
इसलिए नक़्शे को ले आया घर
टाँग दिया दीवार पर

अब दीवार भरी-पूरी लग रही थी
जैसे नक़्शा पृथ्वी को ले आया हो
मेरे घर में

मैं खुश था नक़्शे में
क्योंकि वहाँ इतनी जगह थी
इतनी सारी जगह
कि मैं उसमें सदियों तक रह सकता था
अपने पूरे कुनबे के साथ
मुझे आश्चर्य हुआ
मैं इतने दिनों तक
बिना किसी नक़्शे के जीता रहा
पृथ्वी पर

地図

ケダルナート・シン

わたしは市場へ行った
市場で買った一枚の地図
地図の上にたくさんのものがあった
それらをみんなわたしは知らなかった

わたしは知らなかった
だから地図を家に持って帰った
そして壁に掛けた

今壁は完全に満たされている
わたしの家に
地図が地球を持って来たように

わたしは地図が嬉しかった
そこに場所があった
場所がたくさん
わたしがずっと泊まることができる
自分の家族と一緒に
わたしは驚いた
これまでずっと長い間
地図なしでわたしは生きていた

फिर नक़्शा जैसे कोई क़िला हो
मैं उसमें घुसा
एक किसान का बेटा मैं
सुबह से शाम तक
भटकता रहा नक़्शे में
मैं वहाँ घूमा गड़ेरियों के पीछे-पीछे
और नदियों की याददाश्त में
मैं वहाँ लेटा रहा
अराराट के पत्थरों पर
और युद्ध के मैदानों में
मैंने वहाँ बहुत-कुछ ... बहुत-कुछ देखा
पर नक़्शे में
अपनी दीवार पर टँगे हुए
दुनिया के उस महान् नक़्शे में
मुझे नहीं मिला...
नहीं मिला अपना घर

नक़्शे में कोई राजा नहीं था
पर कानून था
नक़्शे में

स्रोत : यहां से देखें, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली/1999, पृ० 26-27

地球の上に
地図は城のように見えた
その中に入った
農夫の息子わたし
朝から晩まで
うろついていた地図の中に
わたしはあそこを廻っていた羊飼いの後ろに随って
そして川の思い出に
そこに横になっていた
アララートの石の上　と
戦争の野原の上　と
そこにたくさんのもの…たくさんのものを見た
しかし、地図に
自分の壁にかけている
世界のそのりっぱな地図に
見つからなかった…
見つからなかった自分の家

地図に王様はいなかったが
規則があった
地図に

वरयाम सिंह (1948, बंजार, हिमाचल प्रदेश)

कवि, कथाकार, अनुवादक। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के रूसी भाषा केन्द्र में प्रोफेसर। प्रमुख कविता संग्रह : 'दयालु की दुनिया', 'हिमाचल समाचार व अन्य कविताएं' पहाड़ी कविता के लिए हिमाचल अकादमी पुरस्कार, अनुवाद के लिए सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार और रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार से विभूषित। 'दयालु की दुनिया', में पहाड़ी जीवन और पहाड़ की संस्कृति एवं गांव की याद को भगवान, बिल्ली, चिड़िया, दोस्त एवं गांव के स्कूल द्वारा व्यक्त कर भाव-संवेदन के एक नए पहलू से साक्षात्कार होता है। जिंदगी के संघर्षों को झेलते-झेलते, टुकड़ा-टुकड़ा हुआ आदमी दर्शाती है कविता 'नज़र आना साबुत'।

ワルヤム・シン

(1948、バンジャール、ヒマチャル・プラデシュ州)

詩人・翻訳者・ネール大学にロシア語を教える。
主な詩集："ダヤル・キ・デュニヤ"（ダヤルの世界）、
と"ヒマチャル・サマチャル・ワ・アンヤ・カヴィタエン"（ヒマチャルニューズとほかの詩）
主な受賞："ヒマチャル・アカデミ・プラスカール"と
"ネハループラスカール"
自分が生まれたところ山の思い出を猫・村神・犬・鳥・友人・田舎学校などで表現する。人生の苦しみにかけらかけらになった人の心がよく描かれている。

नज़र आना साबुत

तो मैं साबुत नज़र आ रहा हूं आपको।
कृपया आप अपनी आंखों से
मुझे अपने को देखने दें
देखने दें किस तरह टुकड़ा-टुकड़ा हुआ आदमी
नज़र आता है साबुत।

कृपया मुझे बताएं
यदि मैं साबुत हूं
तो अपने को टुकड़ा-टुकड़ा हुआ
क्यों समझ रहा हूं।

देखो-यह मेरा हृदय है
पर इसमें प्रेम कहीं नहीं है
इसका धड़कना
जीवन का प्रमाण नहीं
विवशता है।

यह मेरा मस्तिष्क है
इसने स्वतंत्रता से सोचना छोड़ दिया है,
वह वही सोच रहा है
जो न जाने किसके हित में है।

完全に見える

ワルヤム・シン

とするとあなたにわたしは完全な人に見えるのか。
どうぞわたしに自分の目で
自分を確かめさせよ
「こんなに」かけらかけらになった人
が完全な人に見えるかを。

どうぞ、わたしに教えてくれ
わたしが完全な人ならば
わたしはかけらかけらになったと
なぜ思っているのかを。

見ろ一これはわたしの心だ
これには愛などどこにもない
これの動悸には
生存の証拠などどこにもない
それはやむ得ないことだ。

これはわたしの頭脳だ
これは自由に考えるのを止めた、
これが考えているそのことが
だれのためなのか知らない。

यह मेरा मन है
इसने इच्छा करना छोड़ दिया है,
यह अपनी जगह तय नहीं कर पाया है
इसीलिए भटक रहा है।
आंखें जरूर कुछ देखने का अभिनय कर रही हैं
पर वे वही देख रही हैं
जो उन्हें दिखाया जा रहा है
यही बात कानों के बारे में भी
कही जा सकती है।

कहने को तो खून गरम होना चाहिए,
पर देखो,
कितना ठण्डा पड़ा है।
शरीर के अन्य अंगों के बारे में भी
कम-अधिक यही कहा जा सकता है।

एक साबुत आदमी के साथ
ऐसा कुछ भी तो नहीं होना चाहिए।
फिर आप कहते हैं
कि मैं साबुत नज़र आ रहा हूं।

स्रोत : दयालु की दुनिया, शुभदा प्रकाशन, दिल्ली, 1998 पृ० 10-11

これはわたしの胸だ
これは意欲を止めた、
これはまだ自分の居場所が決められない
だからうろついているだけなのだ。
目が必ず何か見ているふりをしている
しかし見せられたこと
だけ見ている
同じことは耳についても
言える。

名目だけのことで血が熱くならなければならない
なのに、見ろ
血がこんなに冷たいのを。
体の外の部分についても
大体同じことが言える。

完全な人は
こういうものがなくていい。
それでもあなたがいう
わたしが完全な人に見える、と。

कहना कठिन

कहना कठिन है
हमारे संसार में आशाएं अधिक हैं
या निराशाएं।

गिनती करने से भी क्या लाभ?
ज़रूरी है जानना उनका स्वभाव।
एक चीज़ तो निर्विवाद है आशाओं के बारे-
वे निराशाओं से कहीं अधिक उदार होती हैं
निराशाएं होती हैं एकदम यथार्थवादी
और शुभचिंतकों की कामनाओं से कहीं अधिक कृपण।

सुबह आशाओं की हुआ करती हैं
और रातें निराशाओं की।
निराशाओं के घुप्प अंधकार में
निकल आता है कहीं से आशाओं का चंद्रमा
और पूरी बेवकूफी के साथ फैलाता है अपना उजाला।

पर आशाओं की सुबह में
रोशनी ही रहती है हर तरफ,
छुछंदर की तरह सिर छिपाते हैं संदेह,
उचित नहीं लगता निराशाओं को

言うのは難しい

ワルヤム・シン

言うのは難しい
わたしたちの世界に希望が多いか
失望が多いかを

数えても何の利益がある
必要なのはこれらの性格をよく知ることだ。
希望に対してちょっとでも疑わないことだ
失望より慈悲がもっと深いことを
失望は完全に現実主義
好意をよせる人の願望よりもっとけちな

朝は希望の
夜は失望の。
失望の暗闇の中に
希望の月が出てくる
呆けたみたいに自分の明るさが広がる。

しかし希望の朝に
四方に広がる明るさ、
ジャコーネズミのように疑いが隠れている、
失望がふさわしいと思わずに

आशाओं की अकारण भीड़ में शामिल होना।
आशाएं हर चीज़ को अच्छा बताती हैं
चीज़ों के अच्छा होने पर अटल विश्वास है उन्हें।

आशाएं सोचती हैं कि वे अनंत हैं।

यह तो निराशाएं ही जानती हैं
कि आशाओं के अंत में ही तो
स्थित है उनका उत्स।

स्रोत : दयालु की दुनिया, शुभदा प्रकाशन, दिल्ली, 1998 पृ० 37-38.

希望の理由づけなしに群衆に参加すること。
希望はすべてのものを肯定し
肯定すれば強い自信が湧く。

自分が永遠なものだと希望が言う。

「希望を失えば
元の自分に帰るだけだ」と
失望だけが知っている。

प्रयाग शुक्ल (1940, कोलकाता)

कवि, कथाकार, अनुवादक, साहित्य और कला समीक्षक। अनेक सम्मानों से विभूषित। साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार, 'शरद जोशी सम्मान' आदि प्रमुख हैं। 'यहां जो हरा है' व 'इस पृष्ठ पर' नामक कविता संग्रह मुख्य हैं। बारिश, बादल, नदी, लकड़हारे, घास, जल, वायु, यात्री आदि कविताओं के जरिए कवि प्रकृति का बखान करते हैं।

プラヤグ・シュクラ
(1940、コルカーター)

詩人・翻訳者・文芸評論家。
主な詩集："ヤハ・ジョ・ハラ・ヘ・"と"イス・ピリスト・パル"
主な受賞："サヒッテイヤ・アカデミ・ラシュトリヤ・プラスカール"と"シャラド・ジョシ・サッマーン"
雨、雲、川、木こり、草、水、空、旅人、などで自然の重要さを訴える詩人の心が"イス・ピリスト・パル"詩集にみられる。

लकड़हारे

कई थे लकड़हारे। जंगल भी कई थे।
पेड़ भी कई थे। लकड़ियां भी कई थीं-
काटते थे जिन्हें लकड़हारे।
सुबह को जाते थे
लौटते थे शाम को,
वहीं सुस्ताते थे,
किसी ताल झरने
का जल पीकर, रोटी या गुड़ जैसा
साथ ले जाते थे। खाते थे।
वस्त्र उनके अक्सर कुछ
फट ही जाते थे।
भेद उन्हें पता थे -कई-कई लक्षण भी
कई-कई तरह के, वे थे पहचानते-
वन के।

आने लगे धीरे-धीरे कहानियों में
लकड़हारे, खोए हुए किसी राजा
या रानी के, वन में बने थे
सहारे।

देखा था उन्होंने दस्युओं को
छिपकर, देखी थी कहीं किसी
डाल पर बैठकर, दुर्दांत पशुओं की

木こり

プラヤグ・シュクラ

何人かの木こりがいた。森もいくつか。
木も数多い。種類もたくさん—
木こりが切るもの。
朝行って
帰りは夕方、
休憩もそこで
どこかの池・滝
の水飲んでパンや砂糖蜜のような
物を一緒に持って行った。食べていた。
服は彼らのほとんど
破れたこともあった
秘密を知っていた—いくつかの特徴も
いろんな種類の、彼らは知っていた—
森の。

いくつもの話の中に現れてくる
木こり、道に迷った王様
や王妃が森の中で出会った
助力者。

見た彼らが強盗を
隠れて、見たどこかである
枝に座って、強力な動物の

दुर्दर्श लड़ाइयां, हिरण और हाथियों की
गतियां सब, उनको पता थीं।
हाल सब जानते थे चन्द्र और सूर्य
के, जंगल में आने के अर्थ
उन्हें पता थे मेघों के,
गरज-गरज ऊपर लहराने के।
वायु थी मित्र उनकी, खेलती थी
बार-बार लौटकर, साथ वह उन्हीं के,
चंचल चपल होकर, कभी बस
मन्द-मन्द स्मिति से उनको
भरमाकर, कभी-कभी अँधड़ बन
उनको भी वन में थोड़ा- सा
डराकर-

और वे वायु की तरंगों-से ही
थे मृदुल खरगोश जो,
थे उनको बहुत-बहुत प्यारे।
वे पक्षी भी कई प्रकार के,
कई आवाज़ों के
उड़नहारे, वे भी तो साथी थे
हर लकड़हारे के।
कठफोड़वा तो क्या जानें
किसी पूर्वजन्म में
खुद ही रहा हो लकड़हारा!

बहरहाल अलग-अलग देशों में,
अलग प्रदेशों में, नाम लकड़हारों के
अलग-अलग रहे हैं।

恐ろしい喧嘩、鹿 と象の
動作全部、知っていた。
様子を全部知っていた月と太陽
の、森に来る意味を
知っていた雲が、
上で鳴りながら揺れ動くことの。
風は友で、遊んでいた
繰り返し繰り返し戻ってきて、彼らだけと、
いたずらをしながら、いつか
緩慢な微笑で彼らを
驚かせ、時々暴風になって
彼らをも森の中少し
恐れさす—

そして風の波のようだった
柔らかいそのウサギを、
彼らはとても好きだった。
鳥もいろいろ、
いろいろな声で鳴き交わして
飛ぶ鳥、彼らも友だった
木こりたちみんなの。
キツツキは多分
前世では
きっと木こりだったかもしれない！

とにかく別々の国に
別々の場所に木こりの名前は
別々だった。

काम, पर, उनका एक ही रहा है-
काटना लकड़ी, और गट्ठर में
बाँधकर ले आना घर को,
फिर जाना बाज़ार।

फिर निकल जाना अगली सुबह
जंगल को!
कभी-कभी बहुत घने वनों में
खोए हैं ख़ुद भी लकड़हारे,
भूले हैं रास्ता, पर, वास्ता
पेशे का उनका, उन्हें गांव से
जंगल, और जंगल से गांव
पहुँचाता ही रहा है-
उसी तरह, उसी एक छवि में:
काँधे कुल्हाड़ी, एक गमछा-सा
पोटली, फटे हुए वस्त्र, कुछ
खिचड़ी-सी दाढ़ी-और केश भी
थोड़े ही रहते थे सिर पर-

जाने क्यों लकड़हारे, सबको बूढ़े
अधेड़ ही दिखे हैं-
देख लें आप ही, किताबों कहानियों
में वर्णन सब, चित्र भी-
यही दिखलाते हैं!

लकड़हारों की लड़कियों, पत्नी और
पुत्रों की भी हैं कथाएं कई-
इनमें भी दिखते लकड़हारे इसी रूप में।
अब भी हैं लकड़हारे
अब भी हैं वन!

仕事はしかし同じだった—
木を切ること、そして束に
縛って家に持ってきて、
そして市場へ行く。

また出かける次の朝
森へ！
時々とても深い森に
迷ってしまう木こりたち、
道を忘れることがある、しかし仕事の
関係が、彼らを田舎から
森、そして森から田舎へと
行き来させてきたのだ—
同じように、同じイメージの、
肩に斧、手拭いのような物、
小さな包、破れた服、少し
ごま塩ひげ—髪の毛
頭にわずかに残っている—

どうしてだろうか木こりはみな年取ってる
中年に見えたかもしれない、みんなに—
あなたも見てほしい、この話
の描写全部、絵でも—
同じことが表せる！

木こりの娘、奥さんと
息子の物語もたくさん—
どこでも木こりは同じ姿に見える！
今も木こりはいる、
今も森のなかに！

जिनमें कई तो सुरक्षित हैं
अभयारण्य-
घुसना जहाँ उनका तो
सख़्ती से मना है।

जो भी हो, हैं तो, पर, कम हैं
लकड़हारे, और यह भी तो चीन्हना
ही पड़ेगा हमें, हैं भी तो हैं कहाँ,
ग्लोब के कहाँ किस छोर पर!
लकड़हारे!

लेकिन यह तय बिल्कुल तय है,
थे जब लकड़हारे कई-कई, तब थे
आश्वस्त हम वनों के भी
बारे में, पक्षियों-पशुओं को लेकर भी
थे हम निश्चिन्त ही-
शिकारी कभी नहीं बने लकड़हारे!
लकड़ी ही काटते थे वे,
लकड़ियां भी सिर्फ़ वही चुनकर
जो सूखी रूखी हों, आने न वाली हों
फिर जिनमें कोंपलें!

बने रहें, बचे रहें
याद में ही लकड़हारे!

आती रहे लौट-लौट
पास में वन-कथा
कथा लकड़हारों की!

स्रोत : 'इस पृष्ठ पर', वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2004, पृ० 46-49

そこでは木こりはみんな保護されている
恐れの森--
彼らの森に入るのは
強く禁止。

どうあろうとも、どこにでもいる、しかし、少ない
木こりたち、そしているならそれがどこかを
識別しないといけない、
世界のどこどこの奥に！
木こりたち！

しかしこれはもう完全に決定されてしまったことだ、
木こりが多数いた時、
心配なしにいた私たちは、森に対しても
鳥や獣に対しても
心配なしにいた一
狩人にはけっしてならなかった木こりたち！
木だけを切ってきた彼ら、
木も選んだのは
すべては枯れたばかりの、もう一度
芽生えることのない木！

ずっと残っていて、いつまでも生きていてほしい
思い出のなかだけでも、木こりたち！

わたしのところに戻って来てほしい
森の話
話　木こりたちの！

. .

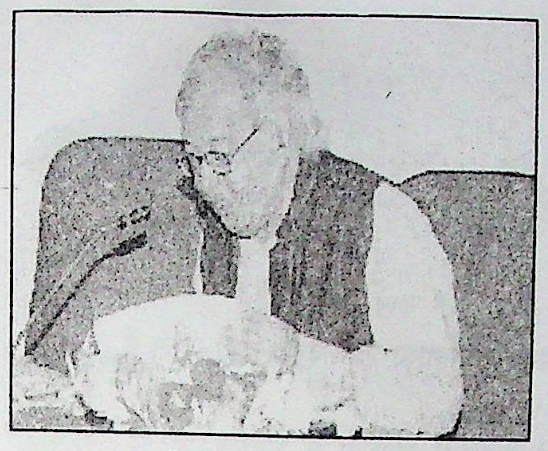

अशोक वाजपेयी (1941)

कवि, आलोचक, संपादक और आयोजक। प्रमुख कविता संग्रह: 'शहर अब भी संभावना है', 'समय के पास समय'। अनेकों सम्मानों से विभूषित। साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय पुरस्कार तथा हिन्दी कविता में उल्लेखनीय योगदान के लिए पहला दयावती मोदी कवि शिखर सम्मान प्रमुख हैं। प्रेम, मृत्यु और आसक्ति के कवि। समय, इतिहास, सच्चाई आदि को लेकर हाशिये पर पड़ी वस्तु उनकी कविता का केन्द्र बनी। सामाजिक समस्याएं, उथल-पुथल, सच्चाई, उनके पात्र जैसे कुम्हार, लुहार, बढ़ई, मुछआरा, कबाड़ी व कंजड़े के द्वारा बखूबी प्रकट हुई है। और यही सार है 'समय के पास समय' का।

アショク・ワジペイー(1941)

詩人・随筆家・劇や文化活動に活発・評論家・主な詩集：“シャヘル　アップ　ビイー　サムバワナへ”（町は今も可能だ）、“サマイェ・ケ・パアス・サマエイ”（時間に時間がある）
主な受賞：“サヒッテイヤ・アカデミ・ラシュトリヤ・プラスカール”と“ダヤワテイー・モデイー・カワイ・シェカール・サッマーン・”
普通愛・死・執着・愛着の詩人。“サマイェ・ケ・パアス・サマエイ”詩集に時間・歴史・事実などを含めて陶工、大工、鍛冶屋、漁師、古道具屋、八百屋を通して社会の事実または社会問題を訴える心が見える。

मछुआरा

अब अगर पता चले कि
दरअसल आकाश एक बहुत बड़ा जाल है

जिसे किसी ने अंतरिक्ष के अदृश्य जल में
सूर्य, चंद्र, तारों-नक्षत्रों, पृथ्वी और ग्रहों को
पकड़ने के लिए फेंक रखा है
और जिसकी जाल फेंक कर आंख लग गई है
तो क्या उसे आप मछुआरा ही कहेंगें?
हो सकता है कि उसका कोई और अच्छा-सा नाम रहा हो
जो अब न उसे या किसी और को याद रह गया है
हमें भी नहीं हालाँकि हो सकता है कि वह हमारा पूर्वज हो।

जाल फेंकना अटकल लगाने जैसा है
हमें कहां पता होता है कि इस बार
कौस-सा सच हमारे फंदे में आने वाला है?
जाल जब भारी पड़ता है
और खींचने पर उसमें मछलियों की बिछलती
चाँदी नज़र आती है
तो हमारी आंखें भी मछलियों की तरह चमकने लगती हैं
कि इस तरह एक डोंगे में समुद्र में इतनी दूर लगभग निहत्थे आना
अकारथ नहीं गया।
समझ में आना कठिन है,

漁師

アショク・バジュペイ

もし気づくなら、
実は空が一つの大きい網だ、と。

それが、見えない水の中に
太陽、月、星――星座、地球と遊星を
捕まえるために広げられている
そして網を広げて寝ている
その人を漁師と言うのか？
その人にはもっといい名前があったかもしれない
その名前を今彼自身も覚えていない
私たちもそれを知らない、とはいえ彼は私たちの
祖先かもしれない。

網を広げるのは、推測するためのようだ
私たちが知らない
どんな事実が今度私たちの罠に来るはずなのか？
網が重くなる時
引っ張るとそこに魚の滑るような
光が見える
すると私たちの目も魚のように光ってくる
こんなふうに舟でこの遠い海にほとんど武器を
持たないまま来たのは
空しくなかった。
分かるのはむずかしい、

कम-से-कम हमारी समझ में,
कि जो जाल में फँसा है,
और तड़पता-बिछलता है, और थोड़ी देर में शांत हो जाता है
वह समय है या कि सच या कि सिर्फ़ थोड़ी-सी मछलियां।

हम समय से पहले पौ फटने से भी पहले
अपनी नावों में समुद्र में निकल आते हैं:
कभी-कभी पूरब में सूर्य ऐसे उछलकर निकलता है
जैसे एक विशालकाय मछली हो
रौशन, ललछौंही, हाथों से फिसलने-फिसलने को।

यह जो पानी में डूबा पर धड़कता और अपार फैला जीवन है-
यह जो अपनी असंख्य आवाज़ों से पुकारता पानी है-
यह जो बदलते-मिटते पानी के, आकाश के, मछलियों के
अनगिनत रंग हैं-
यह जो धीरे-धीरे गुनगुनाती जल वनस्पतियां हैं-
यह जो बहना, बहते जाना, पार न पाना है-
यह जो पानी के ख़िलाफ़ उसे चीरते हुए-
बाँहों और पतवारों और नावों की एक लगातार लड़ाई है-
यह जो मैं हूँ
अपना जाल फैलाए:
यह सब ऐसा क्यों लगता है कि जैसे कभी बीतता नहीं
कि जैसे इसका कोई इतिहास नहीं?
बस है: बस रहेगा।

कभी अपनी नाव पर अनमना बैठा मैं सोचता हूँ:
जैसे हम मरने के लिए नहीं जीते
वैसे ही ये मछलियाँ हमारे खाने के लिए पैदा नहीं होतीं-

少なくとも私たちの知性では、
網の罠にかかり、
不安に滑って、少し後静になるのは
時間なのか事実なのか、それともただ少しの魚
なのか。

私たちは時間の前に、夜明の前に、
自分の舟で海に出かけて来る：
時々、東に太陽が巨大な魚のように
飛んで出る
輝く、大変貪欲な、手から滑りやすい魚のように。

水に沈んでいるしかし動悸しているそして
無限に広がっているこの人生—
私たちを数え切れない声で呼ぶこの水—
この変わる—消える水の、空の、魚の
無数の色—
このこっそりと鼻歌を歌う存在—
この流れること、流れて行くこと、
向こうへ越えないこと—
水の反対にそれを引き裂きながら—
腕と舵と舟とで続ける遭遇戦—
この私
自分の網を広げて：
これらは全部ずっと過ごされないのはなぜ
感じるのか
なぜこういう物の歴史がないように見えるのか？
ただある：ずっとなければならない。

時々自分の舟で落ち着かないで座って考える：
私たちが死ぬために生きるのではない
と同じように、この魚たちも私たちに食べられる
ために生まれたのではない—

जो सुंदर है उसे देर-सबेर कोई-न-कोई लील क्यों जाता है?
पानी का सच जाल का सच नाव का सच और मछलियों का सच
एक दूसरे के ख़िलाफ़ क्यों हो जाता है?
यह सिर्फ़ हमारे समय का फेर नहीं है:
यह तो सदा से ऐसा ही है।
जैसे यह सचाई भी कि हम सब आख़िरकार
एक दूसरे के जाल में फँसे हैं
और सवाल हर समय सिर्फ इतना-सा है कि कौन
किसको पहले फाँसता और खाता है।

मैं तो सिर्फ़ मछलियाँ पकड़ना जानता हूँ
पर अगर किसी जाल में मैं फँस जाऊँ
तो अपनी इन असहाय मछलियों की ही तरह
मुझे कहाँ पता है उससे बाहर आने की तरक़ीब?

मैं शताब्दियों के बारे में ज्यादा नहीं जानता
हालाँकि युद्ध आदि के किस्से कभी-कभी
मैं चाव से पढ़ता रहा हूँ।
यह जो खूंख़ार शताब्दी बीत रही है
कई बार मुझे लगता है कि
आदमी के जाल में धोखे से मछली के बजाय आ गया मगरमच्छ है
जो उसे लील रहा है।
इसे नष्ट किए बिना कोई उपाय नहीं
और फिर जाल फेंकना होगा ताकि
अगली शताब्दी एक सुंदर मछली की तरह आए
जिसे हम खाए बग़ैर वापस समुद्र में कुछ दुलार से छोड़ सकें।

सबसे पहले मछुआरे में भी ममता थी

美しいものを、遅かれ早かれ、なぜだれ
でも飲み込むのだろうか？
水の事実、網の事実、舟の事実そして魚の事実、
なぜお互いに反対しあうのだろうか？
これはただ私たちの時間の問題ではない：
これはいつもそうだった。
これは、最後に私たちもお互いの落とし穴の
中にいるという事実と同じようだ
そして質問はいつもこれだけだ
だれがだれを前に罠にかけて食べるのか、という。

私はただ魚を捕まえるのを知る
しかし私もある罠にかけられたら
自分も無力の魚のように
外へ出る方法をどう知っているのか？

私は世紀について知らない
とはいえ、戦争などの寓話を時々
興味深く読んできた。
今存在しているこの恐ろしい世紀に関して
何回も感じた
人間の落とし穴にだまされて魚のかわりに
ワニが入ってきた
それが人間を飲み込んでいる。
これは滅びるしか方法がない
けれど網を広げなければならない
次の世紀が美しい一匹の魚のように来るように
それをわたしたちが食べないで、海に愛撫しながら
放そう。

以前は漁師にも慈愛があった

और बिलकुल आख़िरी मछुआरा भी
सुंदर को कुछ-न-कुछ बचाएगा,
तभी न आदमी कहाएगा।

स्रोत : 'समय के पास समय', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2005, पृ० 23-25

そして一番最後の漁師も
美しいものを少し護って行くと、
人間と言えるだろう。

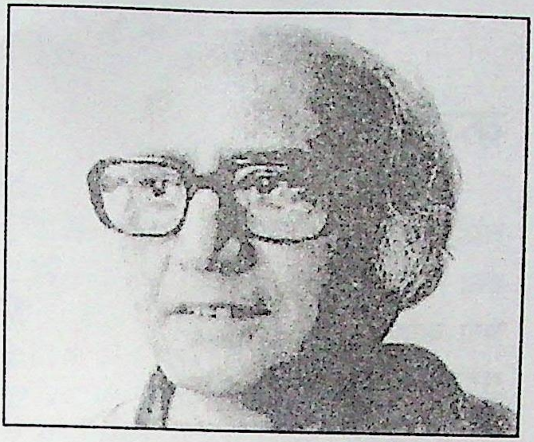

इब्बार रबी (अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)

कवि, पत्रकार, साहित्य आलोचक, स्वतंत्र लेखन। कविता संग्रह : 'लोगबाग' में 'दूध पीता बच्चा', 'जूते', 'घोंसला', 'युद्ध से लौटा सैनिक', 'पहाड़' एवं 'यात्रा' इत्यादि कविताओं द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं से पाठक का संपर्क जोड़ने की कोशिश नज़र आती है।

イッバル・ラビー
(アリガール・ウッタルプラデシュ州)

詩人。記者・文学評論家。先生の仕事をやめ新聞に努める。詩集"ログバグ"（人々）に現代社会に生きるのに人々が直面したいろんな苦労が描かれている。

कडंक्टर

जाड़े की है रात
हवा दिसम्बर की
घना कोहरा
सुनसान सड़क
फुटपाथ पर छटपटाती पत्तियां सूखी
चली जा रही है बस जैसे रोती हुई
कंडक्टर बैठा है चुपचाप पीछे
कोई नहीं मुसाफिर

सुनसान घर कंडक्टर का
गंदी बस्ती में
सुनसान है उसका प्रेम
सुनसान है उसकी रोटी
सुनसान उसकी पत्नी
सुनसान उसका बच्चा
सुनसान है उसका अतीत

चुपचाप बैठा वह पीछे
जैसे कविता की किताब में
निरीह विराम चिन्ह
पहिये के नीचे आये पिल्ले-सा

カンダクター

イッバール・ラビー

冬の夜だ
空気は十二月の
密集した霧
寂しい道
歩度の上にもがく枯れた葉
バスが走っている泣いているように
カンダクターが座って沈黙して後ろに
だれも居ない、乗客。

寂しい家カンダクターの
汚い街の中
寂しい彼の愛
寂しい彼のパン
寂しい彼の奥さん
寂しい彼の子
寂しい彼の過去

黙って座っている彼は後ろに
詩の本に
無関心の停止記号のよう
車輪の下に来た子犬のよう

पड़ा है वह इस दुनिया के गढ्ढे में
टिकट फाड़ता है जैसे
सीना फाड़ रहा हो
मुर्दनी है
पूरी बस में
कोहरे भरे शीत में
ठिठुरता भी नहीं वह
जाड़े की रात
अकेला बैठा है जैसे
जमा हुआ पानी
कीचड़ पर तैर गया हो

कंडक्टर भाई! उठो!
अकेले तुम नहीं हो
कम से कम ड्राइवर को तो
अपना समझो
व्यस्त हैं जिसके हाथ
खाली नहीं है जिसका मन
अकेले नहीं रहोगे तुम
इस आँधी पानी में

तुम सारे दिन चलते रहे
पर गये कहीं नहीं
तुम जीवन भर दौड़े
पर रहे वहीं के वहीं
हम क्या करें
कि तुम मुस्कराओ
क्या करें कि तुम्हारी

落ちている彼がこの世の穴に
切符を引き裂く
胸を裂いているよう
死相はある
すべてのバスの中
霧いっぱいの寒さに
震えもしない
冬の夜
孤独に座っている
凍った水が
泥の上に浮くよう

カンダクター　ねえ君！　立て！
あなた一人ではない
少なくとも運転手を
彼を思え
忙しいのだ彼の手
空しくないのだ彼の心
あなたを一人で残さないように
この暴風と水のなかに

あなたは一日中動いていた
しかし、どこへも行かなかった
人生をずっと走ってきた
しかし同じ所にずっといた
私たちどうしたらいいか
あなたがほほえむために
どうしたらいいか　あなたの

बच्ची स्कूल जाए
क्या करें! क्या करें हम!
कि तुम्हारी पत्नी
खीर पकाये
क्या करें हम
कि तुम लड़ो नहीं घर जाकर
हम क्या करें
कि आफ के दिन
तुम पिक्चर जाओ
परिवार के साथ

स्रोत : 'लोगबाग', राधाकृष्ण, नई दिल्ली 1985, पृ० 77-79

娘が学校へ行けるように
どうしたらいいか！私たちどうしたらいいか！
あなたの奥さんは
乳粥が作れように
私たちどうしたらいいか！
あなたが家へ帰って喧嘩しないように
どうしたらいいか
休みの日にあなたが
映画を見に行けるように
家族と一緒に

ज्ञानेश्वर मनोहर मुले (1958, महाराष्ट्र)

कवि, कथाकार, शोधकर्ता। प्रमुख कविता संग्रह : 'ऋतु उग रही है', 'मन के खलियानों में'। अनेक सम्मानों से विभूषित। 'कौशिक पुरस्कार', 'सांगाती पुरस्कार' प्रमुख हैं। आधुनिक समाज से जुड़ी समस्याएं, बिछुड़ना, प्यार, वैश्वीकरण, संचार एवं जापान के परिवेश से संबंधित कविताओं का संग्रह है 'ऋतु उग रही है'।

ギャネスワル・ムレー
(1958, マハラストラ州)

詩人・作家・研究者・インド政府例えば外務省・
御蔵省などに務・
主な詩集：“マン・ケ・カリヤノ・メ” （心の中置く場所に） と
“リテウ・ウグ・ラヒー・ヘ” （季節が植えている）
主な受賞：“コシク・プラスカール”ト“サンガティー・
プラスカール”
現代生活の直面する危機・国際化・愛の苦しみ・別れ・通信・インド日本を繋がる詩などが“リテウ・ウグ・ラヒー・
ヘ”詩集の素材である。
戦後日本詩と同時のマラテイー詩との詳しい比較。

पहुंच ही रहा हूं

पहुंच ही रहा हूं
शायद बहुत पहले पहुंच चुका हूं मैं...
जहां पहुंचे थे बुद्ध...

नज़र नहीं आयेगा बोधिवृक्ष
क्योंकि नहीं है मेरी जगह उसकी छांव...

झांकिये मेरे भीतर झांकिये...
ध्यानस्थ है एक स्वर्णमयी बोधिवृक्ष
मत छोड़िए उसका पद्मासन
छूइए नहीं उसके पत्ते
नहीं खींचना उसकी जटाएं
यह बोधिवृक्ष है ट्रैफिक की पुलिस नहीं...

पहुंच गया हूं कभी का
जहां पर आकाश का निर्माण होता है
जहाँ पर तैरती हैं आकाश गंगाएं
निर्वस्त्र होकर शैशव समुंदर में,
जहां पर नाम पद्नाम अधिकार कर्तव्य
आदि का आडंबर नहीं है

もうすぐ届く

ギヤネスワル・ムレー

もうすぐ届く
多分ずっと前届いたわたし…
仏が届いたところへ…

見えない菩提樹
なぜかというとわたしの場所はその影ではない…

のぞいてちょうだいわたしの中、のぞいて
ちょうだ い…

一つ金の菩提樹が沈思黙考である
離れないでその蓮座[1]触らないでそれの葉
引っ張らないでそれのもつれ髪
これは菩提樹である交通の警察ではない…

到着したずっと前
空が創造されるところに
銀河が浮くところに
裸で幼時の海に
名前、称号、権利、義務
など虚飾のないところに

---

[1] ヨガ坐方の一種 (paddmaasan)

जहां निश्छलता एकमात्र पहचान है
जहां आत्मा पारदर्शी
और मन है स्फूटिकवत श्वेत
वहीं पर है बोधिवृक्ष
जिसकी छांव में हूं मैं
या जो मेरी छांव में है...
बहुत पहले पहुंच चुका हूं मैं...

कविः कविता संग्रह 'ऋतु उग रही है' आलोकपर्व, 2001, पृ० 109-110।

策略のない心だけが識別であるところに
賢明な精神があるところに
そして心が水晶のように白い
そこにある菩提樹が
それの影にわたしがいる
又はわたしのかげにそれがある…
ずっと前に届いているわたし…

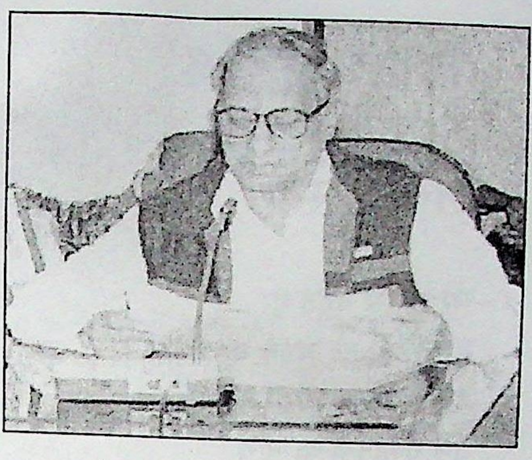

मंगलेश डबराल (1948, काफलपानी)

कवि, अनुवादक, पत्रकार, संपादक व साहित्य समीक्षक। प्रमुख काव्य रचनाएं : 'हम जो देखते हैं 'पहाड़ पर लालटेन'। अनेक सम्मानों से विभूषित। प्रमुख हैं : शमशेर सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार। अपना गांव, पहाड़ की यादें, अपनी ज़मीन, माँ-पिता की यादें, बच्चों के प्रति उम्मीदानुसार कुछ न कर पाने का एकाकीपन, प्यार एवं अत्याचारी का हृदय निहित है 'पहाड़ पर लालटेन' की कविताओं में।

マングレーシュ・ダブラル
(1948，カファルパーニー)

詩人・翻訳者・記者・編集者・文学評論家、主な詩集；"ハム・ジョ・デクテ・ヘーン"（わたしたちが見るもの）と"パハール・パル・ラルテン"（山にちょうちん）
主な受賞："サヒッテイヤ・アカデミ・ラシュトリヤ・プラスカール"と"シャムシェル・サッマーン"詩集"パハール・パル・ラルテン"に自分が生まれたところ、山の村の思い出、父母への思い出、子供に対して自分ができなったことの寂しさ、愛と暴虐の違いの心が描かれている。

लंबा रास्ता

मेरे घर से बहुत दूर
तुम रहती हो अपने घर में
अपने उदास और लंबे रास्ते से लौटती हो
तुम रोशनियों के नीचे
देखती हुई उनका प्रकाशित अकेलापन
तुम्हारी चुपचाप आंखों में
सुबह के पेड़ों के पत्ते कांपते हैं
और मटमैले रंग की यह पृथ्वी हिलती है
तुम चलती जाती हो पेड़ों और पृथ्वी से दूर
मेरे घर से बहुत दूर

यहां लगातार ख़त्म होने
और जन्म लेने की आहटें
बर्फ़ गलने और बंजर ढलानों पर
जीवन के आने की आहटें हैं
हवा में धीरे-धीरे तुम्हारे शरीर की गंध
धीरे-धीरे हाथ-पैर धीरे-धीरे आकार
और महसूस करने के लिए छोटे-छोटे रोंयें
कितने सारे रंगों से मिलकर बने
तुम्हारे रंग से शुरू होते हैं दिन

長い道

マングレース・ダボラル

私の家からとても遠く
あなたが居る自分の家に
自分の悲しくて長い道から帰る
あなた　光明の下　.
見ながらその光り輝く孤独
あなたの黙っている目に
朝の木の葉が震える
そして土色のこの地球が振動する
あなたが行く　木と地球から遠い
私の家からとても遠く

ここにずっと終ることと
生まれることの物音がある
雪が解けることと不毛地の坂に
生活が来ることの物音
空気にゆったりとあなたの肉体の匂い
ゆったりと手足　段々のかたち
そして感じるために小さな小さな体毛
たくさんの色で作られた
あなたの色で始まるのだ毎日

तुम गुज़रती जाती हो आहटों से दूर
हाथ बढ़ाकर मैं तुम्हारे हाथ छूता हूं
चौराहों पर रोशनियों के बीच
उदास और लंबे रास्ते से चलकर आये
मेरे चुंबन
तुम्हारे चेहरे पर थरथराते हैं कुछ देर
कोहरे की तरह
तुम्हारी देह और रक्त में प्रवेश करते हैं
रात को वे चमकते हैं
तुम्हारी नींद में।

स्रोत : 'पहाड़ पर लालटेन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997 पृ० 48-49

あなたは通過してしまう物音から遠い
手を伸ばして私はあなたの手を触る
十字路の光明の真ん中
寂しくて長い道を歩いて
私の接吻
あなたの顔に震える少し間
霧のよう
あなたの肉体と血に入るの
夜それらは光る
あなたの眠りに

अत्याचारियों की थकान

अत्याचार करने के बाद
अत्याचारी निगाह डालते हैं बच्चों पर
उठा लेते हैं उन्हें गोद में
अपने जीतने की कथा सुनाते हैं

कहते हैं
बच्चे कितने अच्छे हैं
हमारी तरह नहीं हैं वे अत्याचारी

बच्चों के पास आकर
थकान मिट जाती है उनकी
जो पैदा हुई थी करके अत्याचार

स्रोत : 'पहाड़ पर लालटेन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 66

暴虐な人の疲労

マングレース・ダボラル

残酷な行為をした後
暴虐な人が視線を投げる子供たちに
持ち上げる彼らを胸に
自分が勝ったことの物語を聞かせるために

彼らが
子供がどんなにいいか、と
私たち暴虐な人のようではない、と

子供の近くに来て
暴虐をしてきた
疲労が消える彼らの

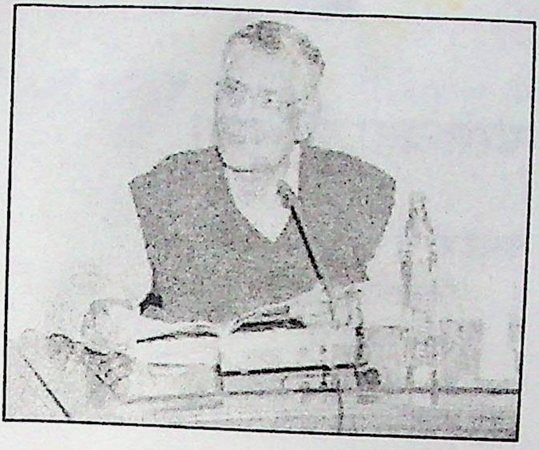

गंगा प्रसाद विमल (1939)

कवि, कथाकार, अनुवादक साहित्य समीक्षक। दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य और अनुवाद का प्राध्यापन। कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित। प्रमुख काव्य रचनाएं : 'कुछ तो है' एवं 'अलिखत, अदिखत'। हिन्दी कविता में नई शैली दिखती है। जिन्दगी के संघर्षों से उत्पन्न अंधकार, आशाओं से विपरीत परिस्थितियों के संघर्ष एवं पीड़ा को 'कुछ तो है' कविता संग्रह बखूबी उजागर करती है।

ガンガ・プラサード・ヴィマル(1939)

詩人・翻訳者・文学評論家、職業：ヒンディ文学の先生としてネール大学，　デリー大学の前教授、
作家、文学評論家。多数の受賞。主な詩集：“クッチ・ト・ヘ”（何かきっとある）、“アリカト・アディカト”（書いてない・見えない）、
ヒンディ詩の現代流を壊す新流がみられる。人生の暗さ、期待通りにものが動かなかったことの苦しみ、などが“クッチ・ト・ヘ”に見られる。

परतन्त्रता में मुक्त

रास्तों से ही
निकलते हैं रास्ते
और रास्तों से
फूटती हैं बन्द गलियाँ

उन्हीं पर चलते हैं हम
या सवारियाँ
और उन्हीं पर
ठहर जाती हैं यात्राएँ।

अनन्त की ओर
न छीजने वाले
एकान्त से
फूटते हैं दिग्मार्ग

न सही पाँव
या टिकने वाले रास्तों जैसे रास्ते
उन पर दृष्टि से भी गहरी
प्रज्ञाएँ चलती हैं अनन्त सी।

यह चलन
ठिठकना

隷属に自由

ガンガ・プラサード・ヴィマール

道からこそ
道が出る
そして道から
発芽する閉まっている路地

その上に歩くのだ私たち
又は乗車
そしてそこに
止まってしまう旅。

永遠の方へ
減少しない
孤独から
発芽する迷う道

足が正しくない
又は留まっていない道のような道
のうえに視線より深い
知識が歩く無限に。

この動き
急に立ち止まること

या लौटना
इतिहास है।
या रास्ते
या फिर अनवरत सा कुछ

जो इन सबसे
परे है
अवाक् सा
खुलापन।

बादल आते हैं
सूरज की तरह रोज़ नहीं
बरसते हैं
हरेक बरसता नहीं
न छाया देता है ताप में

पहाड़ों पर जहाँ
सर्दियों में
तरसते हैं धूप के लिए
स्वागत नहीं होता
बादल का

अपने जिस्म पर ठण्ड सहते
वहाँ भी किसान
देखता है आसमान की ओर
वहीं से आता है
अदृश्य अदृष्ट।

又は戻ること
歴史である。

又は道
又は絶えず、のようなもの

これらすべてより
違うものは
茫然とした
自由さ

雲が来る
太陽のよう、いつもではない
降るが
降らないのもある
陰りもしない暑さに

山に
冬に
大変欲しがる心、日光のために
雲が
歓迎されない

自分の身体に寒さを我慢して
そこにいる農夫も
見るずっと空へ
そこからこそ来る
見えない幸運。

आते हैं बादल
भाग्य नहीं
जाते हैं बादल तो
भाग्य ठहरता नहीं
न सही

दुर्भाग्य का बादल
बरस कर
बरसों के लिए
स्मृति में छप जाता है।

ऐसा ही
चलता है
आवागमन

सहने का क्रम।

कम्प है मन में
भय अपने आहत
अपमानित होने का

कम्प है
जो कम न होगा
निष्पादन होने से पूर्व
उस लक्ष्य का
जिसे स्वीकार है स्वयं

雲が来る
運命が来ない
雲が行くと
運命が留まらない
留まらなくてもいい

不幸の雲が
降って
長年ずっと
思い出に印刷される

このように
続く
往来が

我慢の順序。

振動が心にあり
おそれが　自分が傷つけられ
侮辱されることにあり
減少しない
振動があり
自分も引き受ける
その目標の
完遂の前

स्वीकृति में भागीदार
सभी को बनाया
सभी को सहमति से
फिर भी काँपता मैं हूँ

जब कि शेष
आत्ममुग्धता में
अपने गौरव में लिप्त हैं।

और मैं अपने हीनत्व से त्रस्त
इसीलिए अस्त-व्यस्त हूँ
कम्पित हूँ
मानापमान की सीमाओं में बँधा परतन्त्र।

स्रोत : 'कुछ तो है', आलोकपर्व प्रकाशन, दिल्ली, 2006 पृ० 91-93

引き受けることに
みんなを共同者にして
みんなの賛成で
なのに振動するのは私だ

残りの者は
自己執念にとりつかれたことに
自分の偉大さに没頭されている。

そして私は自分の欠乏で苦しんでいる
だから乱れている
振動している
傲慢侮辱の限界に縛られて隷属的でいる

सुरेश सलिल (1942, उन्नाव)

कवि, कथाकार, अनुवादक, स्वतंत्र लेखन, प्रकाशित प्रमुख कविता संग्रह 'रोशनी की खिड़कियां', नाजिम हिकमत की कविताएं एवं 'गणेश शंकर विद्यार्थी रचनावली' चार खण्ड में। जापानी कविता अनुवाद में विशेष योगदान। अभी तक अनूदित कवियों में से विशेषकर हैं : इशिकावा ताकुबोकु, नाकानो शिगेहारु, ओकामोतो जुन, कामीमुरा हाजिमे, शुन्तारो तानीकावा।

スレス・サリル
(1942, ウンナオ・ウッタルプラデシュ州)

詩人・作家・翻訳者・自由記者・主な詩集："ロシニ・キ・キルキヤン"（光り・の・窓）と"ナジム・ヒクマット・キ・カヴィタエン"（ナジム・ヒクマットの詩）"ロシニ・キ・キルキヤン"に世界の詩が含められ中に日本詩じんの石川啄木、中野重治、俊太郎・谷川らの詩がある。

पौ फटी...

पौ फटी,
औचक जगी,
हो बंधनों से मुक्त
बोली रात–
'लो अब मैं चली!'

सुन रहा हूँ
ओस, भीगे गुलाब को
कि पुरख़्वाब को
'इतने पास अपने'!

पौ–फटे की शांत बेला में
खड़ा हूँ मैं अकेला
सूर्य की करता प्रतीक्षा...

夜が明けた

スレシュ・サリル

1．　夜が明けた、
突然明るくなった、
束縛から解放されて
夜が言った——
‘さあ、この時私が行く！’

2．聞いている
露に濡れた薔薇の囁き
‘一つの夢が
こんなに近く自分の（そばに）’！

3．夜明けた平静な時間に
立っている一人で私
太陽を待っている…

उनीता सच्चिदानन्द (1959, पौड़ी गढ़वाल)

दिल्ली विश्वविद्यालय में जापानी भाषा और साहित्य की प्राध्यापिका। जापानी साहित्य व महिला लेखन से सम्बन्धित शोध कार्य। 1982 से जापानी साहित्य के हिन्दी अनुवाद में लग्न। 20 से अधिक पुस्तकें राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित। ताकुबोकु अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के भारत पीठ 'आकोगारे नो काइ' की अध्यक्ष। प्रमुख रचनाएं : 'इमेजिंग इंडिया, इमेजिंग जापान' 'ए क्रॉनिकल ऑफ रिफ्लेक्शंस ऑन म्युचुअल लिटरेचर' (सह-सम्पादक : तेइजी साकाता), 'ट्रेमर्स विदिन : जेंडर डिस्कोर्स इन मॉडर्न जापान' एवं 'नैरेटिव्स ऑफ चेंज : सोसाइटी एंड वूमेन इन जापान'।

ウニダ　サチダナンド **(1959,** パウリガルワル)

デリー大学に日本文学を教える。女流作家に関する博士論文。1981年から日本文学をヒンディー語の訳を続ける。今まで訳著20冊以上。国際啄木学会のインド支部「あこがれの会」長。主著: イメジングインディヤ
イメジングジャパン：エ　クロニカル　オフ
リフレクション　オン　ムチュワル
リトレチャル（共著：貞二坂田）、テレマル
ウィディン：ジェンダーディスコース　イン　モダン
ジャパン、ネレティブ　オフ　チェンジ：ソサイティー
アンド　ワウメン　イン　ジャパン。

IJALC

आकोगारे नो काइ

इण्डो-जापान एसोसिएशन फॉर लिटरेचर एंड कल्चर